विनोबा कथावली

■ वर्ष : प्रथम ■ अंक : 11 ■ जून 2025

अक्षर से अव्वल तक: एक शिक्षिका का संकल्प

चांदेकसारे (अहिल्यानगर): "वे अक्षर तक नहीं पहचान पा रहे थे, यह स्थिति बहुत गंभीर थी।" शिक्षिका अर्चना शहाणे को चांदेकसारे के जिला परिषद प्राथमिक शाला में जब तीसरी कक्षा की जिम्मेदारी मिली, तो चुनौती मुँह बाए खड़ी थी। कक्षा में 7-8 बच्चे ऐसे थे जो दो साल तक अंग्रेजी माध्यम के निजी स्कूलों में पढ़ने के बाद लौटे थे। विडंबना यह थी कि वे न तो मराठी पढ़ पा रहे थे और न ही अंग्रेजी।

टीम विनोबा से एक मुलाकात में अर्चना जी कहती हैं, "जब बच्चे पढ़ाई में पीछे रह जाते हैं, तो वे खुद को कमजोर मानने लगते हैं। उन्हें लगता है कि वे कभी आगे नहीं बढ़ पाएंगे। यह सोच उनके व्यक्तित्व के लिए घातक है।"

वह जानती थीं कि बच्चों को तीसरी कक्षा के पाठ्यक्रम तक पहुँचाने से पहले उन्हें पहली और दूसरी कक्षा की बुनियादी शिक्षा देनी होगी। उन्होंने बच्चों को पहले उनकी सीखने की गति के अनुसार और फिर छोटे मिश्रित समूह बनाकर पढ़ाया। यह तरीका कारगर साबित हुआ क्योंकि धीरे-धीरे सभी बच्चे एक दूसरे के साथ सीखने लगे।

पढ़ाई में बच्चों की रुचि बनाए रखने के लिए अर्चना जी ने अच्छा प्रदर्शन करने वाले छात्रों को स्टेशनरी उपहार में देना शुरू किया। हर महीने अपनी तनख्वाह का एक हिस्सा वे बच्चों के उपहार के लिए रख देती थी।

"हर छात्र की अलग अलग विषयों में गति होती है। जैसे एक छात्रा भाषा में कमजोर थी लेकिन गणित में तेज थी," अर्चना जी कहती हैं। फिर जो बच्चे गणित में कमजोर थे, उनके लिए अर्चना जी ने एक अनोखा तरीका अपनाया - वे उन्हें ब्लैकबोर्ड के पास बुलाकर बार-बार सवाल हल करवाती थी, जिससे न केवल वे बच्चे सीखते थे, बल्कि पूरी कक्षा को भी लाभ होता था।

अपनी कक्षा की अधिगम उपलब्धियों (learning outcomes) पर काम करने के साथ साथ अर्चना जी ने सहयोगी शिक्षकों की मदद से पाँचवीं कक्षा के छात्रों को छात्रवृत्ति परीक्षा के लिए तैयार किया। परिणामस्वरूप, सात छात्रों ने यह परीक्षा सफलतापूर्वक उत्तीर्ण की, जो बड़ी उपलब्धि थी। तब से हर साल 4-5 छात्र ग्रामीण विद्या छात्रवृत्ति के लिए चुने जाते हैं।

इस यात्रा में 'विनोबा ऐप' भी उनके लिए एक महत्वपूर्ण साधन साबित हुआ। इस ऐप के रूप में उन्हें एक ऐसा मंच मिला, जहाँ वे अपने कार्य को और अपने छात्रों के अच्छे प्रदर्शन को पूरे जिले के शिक्षकों तक पहुंचा सकती हैं। विनोबा ऐप पर उन्हें राज्य के अन्य शिक्षकों का काम भी देखने को मिलता है। वह कहती हैं, "विनोबा पर मिलती जानकारी मेरे लिए एक 'लाइव ऑनलाइन कोर्स' की तरह बन गई है क्योंकि मैं यहाँ से हर दिन कुछ नया सीखती हूँ।"

बातचीत के अंत में वह बताती हैं कि इस वर्ष उन्हें पहली कक्षा की जिम्मेदारी दी गई है और अब उनका लक्ष्य है कि उनकी कक्षा के हर बच्चे की नींव मजबूत बने। "अब ये बच्चे पहली कक्षा से पूरे तैयार हो कर ही आगे की कक्षा में जाएंगे। वे दूसरी या तीसरी कक्षा में जाकर संघर्ष नहीं करेंगे।" ■

बोलेगा बचपन विथ सोनाली कुलकर्णी

"बच्चों से कहिए कि वे अपनी छोटी-छोटी सच्ची बातें लिखें— वहीं से भाषा का प्रेम शुरू होता है।"

पेज 4-5

टीम विनोबा ने पाया कि सफल यूट्यूबर शिक्षकों का एकमात्र रहस्य यह है कि वे अपने किसी भी ज्ञान को दूसरों के साथ साझा करने में संकोच नहीं करते। वे अपनी सफलता का रहस्य हर उस व्यक्ति के साथ बाँटते हैं जो सीखने के लिए उत्सुक है। वे चाहते हैं कि अन्य लोग भी उनका हुनर सीखें और आगे बढ़ें।

विनोबा विशेष

पेज 6, 7, 8

'कुर्सी नहीं, क्लासरूम ही शिक्षा का दिशादर्शक'

"मुझे स्कूलों में जाकर बच्चों से बात करना और ऐसे शिक्षकों से मिलना जो कुछ नया सीखना चाहते हैं, बेहतर करना चाहते हैं, अच्छा लगता है। यहाँ कुर्सी पर बैठकर मुझे डेटा और रिपोर्ट मिल जाते हैं लेकिन मैं ज़मीन पर जाकर ही देख सकती हूँ कि मेरी बनाई नवाचारी योजनाएं शिक्षकों के कितने काम आ रही हैं।"

नागपुर जिले की DIET प्राचार्या डॉ. हर्षलता बुराडे ने हाल ही में टीम विनोबा के साथ बातचीत की। उन्होंने FLN और भविष्य की राह से जुड़े कई पहलुओं पर खुलकर चर्चा की। डॉ. बुराडे ने शिक्षा के व्यावहारिक पहलुओं और ज़मीनी स्तर पर इन पहलों के प्रभाव को समझने की आवश्यकता पर ज़ोर दिया।

नागपुर जिले में FLN की क्या स्थिति है?

नागपुर जिले में क़रीब 1530 ज़िला परिषद स्कूल हैं, जिनमें 68,021 से ज़्यादा बच्चे पढ़ते हैं। इनमें से लगभग 500 स्कूलों में आधारभूत सुविधाएं कमजोर हैं।

इसके बावजूद, हमने पिछले कुछ सालों में FLN में प्रगति देखी है। उदाहरण के लिए, कोविड के दौरान हमने यूट्यूब पर छोटे-छोटे वीडियो अपलोड किए — मराठी, अंग्रेज़ी और गणित की संकल्पनाएं ,साथ ही कला और खेल से जुड़ी गतिविधियाँ भी। बच्चों की समझ और याददाश्त दोनों में फर्क साफ दिखा — और वो पढ़ाई में रुचि भी लेने लगे। इससे यह भी पता चला कि अगर सातत्य हो, तो हर दिन FLN का एक से सवा घंटे का पाठ भी बच्चों की अधिगम उपलब्धियों (learning outcomes) में बड़ा सुधार ला सकता है।

शहर के स्कूलों की क्या खास चुनौतियाँ हैं?

हमारे १०० नगरपालिका स्कूल हैं, जिनके सामने सबसे बड़ी चुनौती है — निजी और अनुदानित स्कूलों से मुकाबला। कई सरकारी स्कूल बोर्ड परीक्षाओं में भी अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं लेकिन जो स्कूल झुग्गी बस्तियों में हैं या जहाँ प्रवासी मजदूरों के बच्चे पढ़ते हैं, वहाँ हालात मुश्किल हैं। एक स्कूल रेड-लाइट एरिया में है — वहाँ शिक्षकों को घर-घर जाना मुश्किल हो जाता है।

समुदाय की भागीदारी कितनी हो रही है?

पिछले दो दशकों में समुदाय की भागीदारी काफी घट गई है। गाँवों में कई बार शिक्षक कम पढ़े-लिखे या आदिवासी माता-पिता से संवाद नहीं करना चाहते। जब तक शिक्षक स्वयं आगे बढ़कर यह रिश्ता नहीं बनाएँगे, तब तक अभिभावक भी जुड़ाव महसूस नहीं करेंगे। हम शिक्षकों को प्रशिक्षणों में बार-बार समझाते हैं कि भागीदारी का मतलब स्कूल के लिए समुदाय से केवल चंदा इकट्ठा करना नहीं है, बल्कि स्कूल की पढ़ाई और गतिविधियों में उन्हें शामिल करना है।

इस समय आपकी प्राथमिकताएँ क्या हैं?

हम अभी NAS के परिणाम को सुधारने की दिशा में काम कर रहे हैं। साथ ही, शिक्षकों के लिए Online Training Module बना रहे हैं — ताकि हर शिक्षक जहाँ है वहीं से इसका लाभ उठा सके। सारे शिक्षकों को प्रत्यक्ष प्रशिक्षण देना संभव नहीं है। साथ ही, कक्षा अवलोकन (Classroom Observation) को भी मजबूत करना है।

केंद्रप्रमुख और BEOs को यह पता होना चाहिए कि ज़मीनी स्तर पर कहाँ क्या दिक्कतें है, क्या क्या सुधार चाहिए, और बच्चे किन वजहों से पीछे हैं। जो अधिकारी प्रशासनिक कार्यों से स्कूल के लिए समय नहीं निकाल पाते उन्हें हम प्रशिक्षणों के द्वारा समझाते हैं कि शिक्षा तंत्र का मकसद ही यह है कि बच्चों को अच्छी और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिले, तो फिर हमारे प्रशासनिक कामों के नियोजन में भी स्कूल विजिट को प्राथमिकता मिलनी चाहिए।

चुनौतियाँ अनेक हैं। ऐसे में आपको हौसला कहाँ से मिलता है?

कई लोग दिल से काम कर रहे हैं — मेरा ध्यान उन्हीं पर होता है। वही मुझे ऊर्जा देते हैं। एक बार एक शिक्षिका ने मुझसे कहा, "DIET से मिले FLN की ट्रेनिंग से अब मैं अकेले १-४ कक्षाओं को सँभाल पाती हूँऔर बच्चों को अच्छी गुणवत्ता वाली शिक्षा भी दे पाती हूँ।" जब ऐसा कुछ सुनाई देता है, तो यही पल हौसला देते हैं।

विनोबा ऐप से क्या सहयोग मिल रहा है ?

शिक्षकों को प्रोत्साहित करने के लिए विनोबा ऐप की जो प्रतियोगिताएँ और इनाम हैं, वो वाकई में अच्छी पहल है। विनोबा ऐप के रूप में हमे देश के सरकारी शिक्षकों के बीच संवाद स्थापित करनेवाला एक मज़बूत मंच मिला है। इसके दैनिक उपस्थिति और test score देनेवाले Data Tools भी बड़े काम के हैं लेकिन अगर यह एक एक स्कूल में बच्चों की पढ़ाई की गुणवत्ताका डेटा भी हमे दे सके, तो यह बहुत उपयुक्त होगा। हम उन स्कूलों पर ज़्यादा ध्यान दे पाएँगे जिन्हें तुरंत मदद की ज़रूरत है।

वागधरा स्कूल में पनप रहा अनोखा पुस्तक प्रेम

वागधरा (नागपूर): वागधरा गाँव की जिला परिषद स्कूल का यह नज़ारा देखकर कोई भी चौंक सकता है। बच्चे अपनी ही दुनिया में खोए हुए हैं—कोई सीढ़ियों पर बैठकर पढ़ रहा है, कोई किसी पेड़ की छाँव में, तो कोई खुद पेड़ पर चढ़कर, कोई घास पर लेटकर, तो कोई कक्षा के फर्श पर पसरा हुआ।

इन्हें किताबों में ऐसी रुचि है कि अगले एक घंटे तक न तो वे उठेंगे, न ही कहीं और जाने के लिए तैयार होंगे। यह उनके स्कूल का सबसे पसंदीदा समय होता है। यह नागपुर जिले के हिंगना ब्लॉक की वागधरा ज़िला परिषद स्कूल है, जहाँ केवल दो शिक्षक —अर्चना पाटमासे और संजय चौधरी —मिलकर 55 छात्रों को पढ़ाते हैं। उन्होंने अपनी मेहनत से स्कूल में पढ़ने की यह अद्भुत संस्कृति विकसित की है। इस स्कूल के समृद्ध पुस्तकालय में शिक्षकों, गाँववालों और अधिकारियों के योगदान से लगभग 550 कहानी की किताबें हैं। समस्या यह थी कि बच्चे इन्हें पढ़ते नहीं थे।

पूरी कहानी पढ़िये विनोबा ऐप पर

शब्द नहीं, विचार चाहिए!

पुणे जिले के नसरापुर गाँव में एक तीन कमरों वाली जिला परिषद स्कूल थी। मिट्टी का आँगन, पास में पेड़ों की छाया और सुबह-सुबह गाने वाली चिड़ियाँ। स्कूल अभी-अभी शुरू हुआ था।

गुरुजी चौथी कक्षा में अंग्रेजी का पहला पाठ पढ़ाने गए। उन्होंने ब्लैकबोर्ड पर लिखा।

The cat is on the mat.

उन्होंने पूछा, "इसका मतलब कौन बताएगा?"

गणेश बोला, "यानी बिल्ली चटाई पर बैठी है ना?"

गुरुजी हँसे। "बिल्कुल सही!"

फिर बालू बोला, "मेरे पिताजी कहते हैं कि अगर अंग्रेजी नहीं आई, तो हम पीछे रह जाएँगे।"

गुरुजी ने शांति से पूछा, "बालू, तुम्हारी दादी को अंग्रेजी आती है क्या?"

"नहीं, पर उन्हें हर चीज़ की समझ है। घर की बातें हों या खर्चा, आप कुछ भी पूछें, उनके पास हमेशा जवाब होता है।"

"तो क्या तुम्हें लगता है कि वो पीछे रह गई हैं?"

बालू ने ना में सिर हिलाया।

गुरुजी बोले, "सिर्फ़ अंग्रेज़ी जानना ही काफी नहीं है। यह दुनिया भर में बातचीत की एक भाषा है, लेकिन हमें अपनी भाषा को कम नहीं समझना चाहिए। दोनों सीखना ज़रूरी है। लेकिन असली आत्मविश्वास कहाँ से आता है, पता है? अपनी भाषा से!"

"कई देशों में बच्चों को अपनी ही भाषा में शिक्षा दी जाती है, फिनलैंड इसका एक उदाहरण है। फिनलैंड यह समझता है कि शिक्षा केवल रटने का नाम नहीं, बल्कि विचारों को विकसित करना है, और यह अपनी भाषा में सबसे आसानी से होता है।"

फिर उन्होंने धीरे से पूछा, "अगर मैं तुमसे तुम्हारा पसंदीदा गाना या कोई अनुभव बताने को कहूँ, तो तुम किस भाषा में बताओगे?"

"मराठी में!" सभी एक साथ बोले।

"यानी विचार तो तुम्हारे पास पहले से ही हैं। लेकिन दूसरी भाषा में बोलते वक्त पहले शब्द ढूँढने पड़ते हैं, फिर विचार रखने पड़ते हैं। जैसे एक सीढ़ी ज्यादा चढ़नी पड़ती है।"

शिक्षा संदेश

गुरुजी ने कहा, "क्या तुम्हें पता है? डॉ. रघुनाथ माशेलकर किस स्कूल में पढ़े थे?"

गणेश उलझन में बोला, "किस स्कूल में?"

"वो मराठी में पढ़े। जिला परिषद स्कूल में! उस समय वहाँ अंग्रेजी नहीं थी। उनका कहना है कि मुझे समझदारी अंग्रेजी की वजह से नहीं, बल्कि अपनी मातृभाषा में सोचने से आई।"

गुरुजी आगे बोले, "डॉ. विजय भटकर, जिन्होंने 'परम' सुपरकंप्यूटर बनाया। संदीप खरे, एक संवेदनशील कवि, गीतकार और संगीतकार, जिनकी कविताएँ आज कई लोगों के दिलों में बसती हैं। और एक और बड़ा नाम, अॅड. उज्ज्वल निकम, जिन्होंने देश के कई बड़े मुकदमों में सरकारी वकील के तौर पर काम किया। इन सभी की पढ़ाई जिला परिषद स्कूल में हुई है।"

गुरुजी रुके। कुछ क्षणों बाद बोले, "इन लोगों ने शुरुआत हमारी तरह ही जिला परिषद स्कूल से की थी। उन्हें पढ़ाई का आत्मविश्वास अपनी भाषा से मिला, इसीलिए वो इतना आगे गए।"

उस दिन क्लास खत्म होने के बाद बच्चे खेलने गए। लेकिन थोड़ी देर बाद रूपाली, गणेश और बालू वापस क्लास में आए।

रूपाली बोली, "हम तीनों ने फैसला किया है कि हम अगले हफ्ते पास के गाँव के स्कूल में होने वाली प्रतियोगिता में हिस्सा लेंगे!"

गणेश बोला, "गुरुजी, आप वहाँ जरूर आएगा। हम आपका इंतजार करेंगे।"

गुरुजी बस हल्के से मुस्कुराए।

प्रतियोगिता के दिन गुरुजी साइकिल से पास के गाँव पहुँचे। कुछ बच्चे बोलने की तयारी कर रहे थे, कुछ अपनी बारी का इंतजार कर रहे थे। तभी मंच पर रूपाली, गणेश और बालू आए। उन्होंने बोलना शुरू किया। उनके शब्द पक्के नहीं थे। कभी रुके, कभी गलती हुई लेकिन हर वाक्य उन्होंने दिल से बोला। शुरूआत मराठी में हुई। धीरे-धीरे शब्द उनके होंठों पर आने लगे। गलती का डर नहीं था क्योंकि हर वाक्य के पीछे उनका आत्मविश्वास झलक रहा था। दर्शक चुपचाप सुन रहे थे और धीरे-धीरे बच्चों की सादगी और मेहनत के लिए तालियाँ बजने लगीं। गुरुजी की आँखें भर आईं। उन्होंने चुपके से अपनी आँखें पोंछ ली।

वो धीरे से खुद से बुदबुदाए,

"यही तो चाहिए था। बच्चों को भाषा का नहीं, विचारों का आत्मविश्वास चाहिए! फिर कोई भी भाषा उनके लिए रुकावट नहीं बनेगी। वो अपने मन की बात शब्दों में कह पाएँगे।"

- संदेश संजय थोरवे

जब कविता, कहानी और कल्पना ने मंच पर ली उड़ान

भाषा, लय, मौलिकता और अभिव्यक्ति के गुर सिखाए बच्चों ने—OLF के 'बोलेगा बचपन विथ सोनाली कुलकर्णी' में

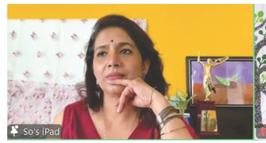

रहा है। हम बच्चों के लिए एक ऐसा राष्ट्रीय मंच बनाना चाहते हैं, जहाँ कहानी, कविता, भाषा और आलोचनात्मक सोच के बीज बोए जा सकें।'बोलेगा बचपन विथ सोनाली कुलकर्णी' ने हमे उस सपने के पूरे होने की झलक दी है। हम सरकारी स्कूलों के बच्चों की आवाज़ बनना चाहते हैं और आज हमने देखा कि बच्चे दुनिया को ध्यान से देख रहे हैं और पूरे जोश के साथ उसे अभिव्यक्त भी कर रहे हैं। मुझे विश्वास है कि हम अपने मिशन की ओर एक-एक क़दम आगे बढ़ रहे हैं।" ■

कभी कहानी में कोई लड़की अपने सपनों को रुई के फाहों में बुनती दिखी, कभी कोई बच्चा अपनी माँ की थाली से उठती भाप में ज़िंदगी की महक ढूंढ़ता नज़र आया। 'बोलेगा बचपन विथ सोनाली कुलकर्णी' —ओपन लिंक्स फाउंडेशन (OLF) का यह विशेष आयोजन—ऐसा था जहाँ बच्चों की कहानियाँ केवल काल्पनिक नहीं थीं, वे अनुभव थीं। शिक्षकों की कविताएँ केवल तुकबंदी नहीं थीं, वे दृष्टि थीं।

महाराष्ट्र के कोने-कोने से चुने गए 20 शिक्षक अपने साथ एक-एक छात्र को ले आए थे। कार्यक्रम में किसी ने एक छोटी सी कहानी सुनाई, किसी ने जीवन की किसी घटना को कविता में ढाला और किसी ने बस दिल से कही गई बातों की चमक से सबको चौंका दिया। 'बोलेगा बचपन...' एक ऐसा मंच बन गया, जहाँ सरकारी स्कूलों के बच्चे और शिक्षक अपनी-अपनी आवाज़ में ज़िंदगी के अनुभव साझा कर रहे थे।

इस पूरी रचनात्मकता को देखने, सुनने और महसूस करने आई थीं सोनाली कुलकर्णी—एक ऐसी अभिनेत्री जो पिछले ढाई दशक से हिंदी और मराठी सिनेमा में अपने विचारशील अभिनय के लिए जानी जाती हैं। लेकिन इस दिन वह मंच पर एक कलाकार की तरह नहीं, एक श्रोता और एक शिक्षक की तरह थीं—जो बच्चों की कल्पनाशीलता से उतनी ही उत्साहित थीं, जितनी वो खुद थिएटर के दिनों में होती रही हैं।

सोनाली जी, जो एक मंझी हुई अभिनेत्री होने के साथ-साथ एक संवेदनशील लेखिका भी हैं, बच्चों और शिक्षकों की रचनात्मकता से हैरान रह गईं। उन्हें यह देखकर खुशी हुई कि बच्चे जीवन को सूक्ष्मता से देख रहे हैं, अनुभव कर रहे हैं और फिर उसे अपनी भाषा में सजीवता से अभिव्यक्त भी कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि इन बच्चों की कहानियाँ किसी स्क्रिप्ट की नकल नहीं थीं, वे उनके दिल की बातें थीं। जब कुछ शिक्षकों ने कविता में अपना परिचय दिया, तो सोनाली जी सचमुच अभिभूत हो गईं—उन्हें लगा जैसे यह कोई आत्मीय संवाद का क्षण है।

'लाइन एक, अंदाज़ अनेक': जब मंच पर उभरे रंग-बिरंगे भाव

कार्यक्रम का एक विशेष हिस्सा था—'लाइन एक, अंदाज़ अनेक'। इसमें शिक्षकों को एक ही पंक्ति अलग-अलग भावों में बोलने को कहा गया—कभी गुस्से में, कभी उदासी में, कभी हास्य में। यह एक ऐसा खेल था, जिसमें सारे शामिल हो गए। किसी ने अभिनय किया, किसी ने भावों को आवाज़ से उतारा। यह न केवल मनोरंजक था, बल्कि यह दिखाता था कि एक शिक्षक जब मंच पर आता है, तो वह कितनी रंगतें साथ लाता है।

शिक्षक, कलाकार और दर्शक—तीनों की भूमिका निभाती सोनाली जी

"मुझे समय पर पहुँचना पसंद है... अपने परफॉर-मेंस के लिए पहले से तैयार रहना, सचेत रहना पसंद है।"

जब सोनाली जी ने यह बात कही, तो वह मंच पर एक कलाकार की तरह नहीं, एक शिक्षक की तरह थीं—जो अपने हर शब्द से यह सिखा रही थीं कि प्रस्तुति केवल शब्दों का मेल नहीं, वह एक मानसिक अनुशासन है।

उन्होंने मंच से कोई प्रवचन नहीं दिया, बल्कि हर प्रस्तुति के बाद छोटे-छोटे भावनात्मक और व्यावहारिक सुझाव दिए—जैसे, "रुकने से मत डरो। ठहराव भी एक संवाद है।" या फिर, "किसी की भाषा या लहज़ा उसकी गहराई का मापदंड नहीं हो सकता।" उन्होंने बच्चों को यह भी बताया कि अपनी कमजोरियों को पहचानना कमजोरी नहीं, बल्कि आत्मविश्वास का पहला कदम है।

सपनों की ओर एक और क़दम

कार्यक्रम के अंत में OLF के संस्थापक-सीईओ श्री. संजय डालमिया ने बताया, "OLF इस वक्त 40,000 से अधिक सरकारी स्कूलों के साथ काम कर

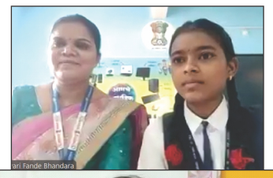

परवा 'गुलाबजाम' खाता खाता मला कविता सुचली,
'दिल चाहता' है तुम्हाला ती वाचून दाखवावी वाटली,
तुमच्यासारखी आवड मला अभिनयाची,
वाटले मला 'अगंबाई अरेच्चा'
जेव्हा डॉ. श्रीराम लागू कडून
पुरस्कार मिळाला मला अभिनयाचा.
अभिनयाचा छंद जोपासते आता मी शाळेच्या 'देऊळ' मध्ये ,
शाळेमुळे अवॉर्ड मिळतात विनोबा मध्ये..
'डॉ. प्रकाश आमटे' सारखाच
डॉ. नवरा माझा आहे,
'सुशीला सुजित' नवऱ्यासोबत पाहणार आहे .
आणि 'डॉ. काशिनाथ घाणेकर' सारखे
शेवटी माझे नाव आले.
त्याचे थोडेसे सार्थक करावे वाटले.
माझे नाव आक्षेपा महामुनी
आता करते थोडीशी थट्टा मस्करी,
कशी वाटली माझी कविता सांगा खरी खरी....

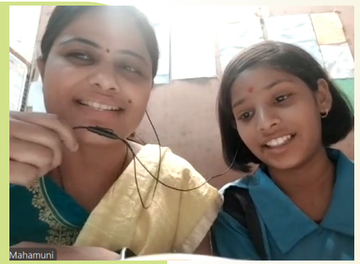

आक्षेपा महामुनी, पुणे

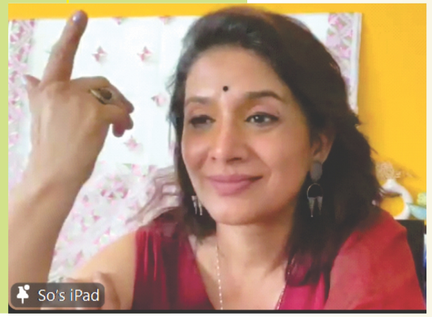

"वाह ! क्या बात है !"

माझी ओळखी काय सांगू
माझी मलाच ओळख नाही,
ओळखीच्या या जगात वाटते
कोणी मला ओळखत नाही .

जितेंद्र रायपुरे,
धाराशिव

संवादाची उत्तुंग भरारी!
भरतनाट्यम , शास्त्रीय संगीत
अशा कौशल्यावर ज्यांचा ठसा
समन्वयाच्या नाट्यसमुहातून
जोपासला अभिनयाचा वसा

जिच्या डोळ्यात संवाद अन्
हावभाव एक भाष्य
ती जणू एक रंगमंच
फुलून उठतो प्रत्येक दृश्य

ती शब्द नाही भाव पेरते
मानवतेचा स्वभाव पेरते
अभिनयावर आरूढ होऊन
ती जीवनाचा अर्थ शोधते

ती साकारते दुःख, आनंद अन् वेदना
अभिनयात पाझरतो तिचा आत्मा
ती प्रत्येक संवादाची कविता जणू
हृदयातली ती सजीव प्रतिमा

अशा सोनाली कुलकर्णी मॅम शी
होता संवाद
माझे आभाळ ठेंगणे झाले
स्वप्नात कधी पाहिले नाही
असे क्षण प्रत्यक्षात आले

पुन्हा पुन्हा अशा प्रतिभावंताशी
संपन्न व्हावेत संवाद सोहळे
अंतःकरण पूर्वक आशा करतो मी

सचिन कांबळे, चंद्रपूर

जिला परिषद स्कूल की टेक सैवी शिक्षिका

कोकलगांव (वाशिम): क्या आप यकीन करेंगे कि वाशिम जिले के दूर-दराज़ कोकलगांव की एक साधारण सी जिला परिषद स्कूल की शिक्षिका मिनाक्षी नगराले हर महीने अपने यूट्यूब चैनल Meenakshee P Nagrale से 100 डॉलर कमाती हैं?

मिनाक्षीजी बताती हैं कि वे लगातार १० साल से ये वीडियो बना रही थी। "जब 2015 में पहली बार कक्षा में हो रहे अध्यापन को मोबाइल पर रिकॉर्ड करना शुरू किया, तब लोग हँसते थे, पर मेरा मानना था कि बच्चों को बार बार वही पाठ पढ़ाने से अच्छा उसे रिकार्ड कर लिया जाए। इससे बच्चे भी पढ़ाई की ओर आकर्षित हुए क्योंकि कुछ नया हो रहा था।"

उन्होंने हर दिन की पढ़ाई का वीडियो बनाना शुरू किया। शुरू में बच्चे हिचकिचाते थे लेकिन फिर सिखाने वाली एक टीम बन गए।

2023 आते-आते चैनल पर इतने वीडियो हो गए कि हर महीने 100 डॉलर की कमाई शुरू हो गई। लेकिन ये कमाई उन्होंने खुद के लिए नहीं रखी। इस पैसे से पहले उन्होंने स्कूल के लिए माइक, ट्राइपॉड और अन्य डिजिटल सामग्री खरीदी। फिर ज़रुरतमंद छात्रों के लिए किताबें और कपड़े खरीदना शुरू किया।

मिनाक्षी जी को विश्वास था कि अगर स्कूल में कुछ बेहतर किया जाए, तो स्कूल छोड़कर निजी स्कूलों में जानेवाले बच्चे वापस लौटेंगे। हुआ भी यही। एक अभिभावक बताती हैं, "हमने अपनी बेटी को प्राइवेट स्कूल से निकालकर वापस यहीं डाल दिया है। मैंने इतनी रुचि और आत्मविश्वास पहले कभी उसके चेहरे पर नहीं देखा था।"

एक दिन कक्षा 4 की ईश्वरी ने पूरी कविता सुनाई और उसका वीडियो बना, तब खुद को यूट्यूब पर देखकर वह खुशी से भर गई। उस दिन के बाद तो कक्षा का माहौल ही बदल गया। ईश्वरी कहती है, "अब से मैं रोज़ मन लगाकर पढ़ाई करती हूँ ताकि मैडम फिर से मेरा वीडियो बनाएं!"

धीरे-धीरे बच्चे खुद ही मैडम का मोबाईल लेकर रिकॉर्डिंग करने लगे और अपलोड भी करने लगे। किसी को वीडियो में आना अच्छा लगने लगा, किसी को उसे बनाना... और सब मिलकर सीखने-

मिनाक्षी जी ने पढ़ाई को रोचक बनाने के कई तरीके निकाले। स्कूल में कविताएं गीतों में ढलने लगी, पहाड़े खेल-खेल में याद होने लगे, राज्यों के नाम दोहों में आ गए। वीडियो ने अध्यापन का काफी समय बचाया, जो उन्होंने गांववालों, पंचायत और निजी दानदाताओं से मिलकर स्कूल को सुंदर बनाने में लगा दिया।

परिणामस्वरूप, 2024 में स्कूल ने 'माझी शाळा सुंदर शाळा' का पुरस्कार जीता। उसी साल मिनाक्षी जी को 'आदर्श शिक्षक पुरस्कार (2023-24)' भी मिला। उन्होंने बच्चों को कक्षा से बाहर, जीवन का पाठ पढ़ाने के लिए कई कविताएँ और कहानियां भी लिखीं जिन्हें, शिक्षकों और अभिभावकों से काफी सराहना मिली।

इन सभी उपलब्धियों के बीच, उनकी आँखें सबसे ज़्यादा तब चमकती हैं जब वे कहती हैं, "हर बच्चे को यह एहसास दिलाना कि वह कुछ कर सकता है—यही मेरा सबसे बड़ा पुरस्कार है।" ■

विनोबा ऐप से मिली नई ऊर्जा

टेक सैवी मिनाक्षी जी शैक्षिक ऐप्स पर एक किताब लिखने के लिए शोध कर रही थीं, तभी उन्हें विनोबा ऐप मिला। उन्होंने पाया कि यह ऐप हर शिक्षक के लिए एक उपयोगी संसाधन है क्योंकि इसमें शासन निर्णय, शैक्षिक परिपत्र, ट्रेनिंग की तारीखें और योजनाओं जैसी सभी ज़रूरी जानकारियाँ एक जगह उपलब्ध हैं। टीम विनोबा, जब मिनाक्षी जी से मिली, तब पाया कि वे पहले से ही इस ऐप का इस्तेमाल करना शुरू कर चुकी थी। उन्होंने हमसे कहा, "मुझे इस ऐप से नई ऊर्जा मिली है क्योंकि मुझे इस ऐप के द्वारा देशभर के शिक्षकों से जुड़ने की संभावना दिखाई देती है।"

शिक्षा का सिंगल विंडो – KC Sir Ki Classes

खोरपा (रायपुर):

"आप के.सी. साहू हैं ना?"

किसी ने उनसे पूछा। साहू जी ने पीछे मुड़कर देखा और उस व्यक्ति से कहा, "जी, मैं ही... के सी साहू।"

उस व्यक्ति ने कहा, "सर, मैंने आपको आपकी आवाज़ से पहचाना क्योंकि मैं आपके वीडियो हमेशा देखता हूँ। बहुत कुछ सीखा है आपके वीडियो से।" साहू जी, जो रायपुर जिले में खोरपा के संकुल शिक्षा समन्वयक (CAC) हैं, एक विवाह समारोह में आए हुए थे। वहाँ उनसे मिलकर वह व्यक्ति ऐसा खुश हुआ जैसे कोई सेलिब्रिटी मिल गया हो।

क्यों न हो? साहू जी का प्रसिद्ध YouTube चैनल –KC Sir Ki Classes – पिछले ५ साल से हर उम्र के लोगों को शिक्षा से संबंधित कितनी ही महत्वपूर्ण संकल्पनाएँ समझने में मदद कर रहा है। आज इस चैनल के 3 लाख से ज़्यादा सब्सक्राइबर हैं। YouTube उन्हें सिल्वर बटन भी प्रदान कर चुका है।

हाल ही में साहू जी ने टीम विनोबा से बातचीत की। "वीडियो बनाने के पीछे मेरा उद्देश्य बस इतना ही था कि ज़्यादा से ज़्यादा लोगों को इनसे फायदा हो, उनकी समस्याएँ सुलझें। जब लोग आकर इस तरह मेरे काम की अभिस्वीकृति देते हैं तो संतुष्टि होती है।"

कोरोना में लॉकडाउन के दौरान उन्होंने यह चैनल शुरू किया। उस वक्त बाहर जाकर ट्राइपॉड वगैरह खरीदना संभव नहीं था, तो उन्होंने घर पर ही एक पाइप, सीमेंट और चम्मच का उपयोग करके मोबाइल फोन कैमरा लगाने के लिए एक स्टैंड बनाया। उन्होंने तुरंत यह स्टैंड कैसे बनाया जाए इसका भी वीडियो बना डाला, ताकि दूसरे

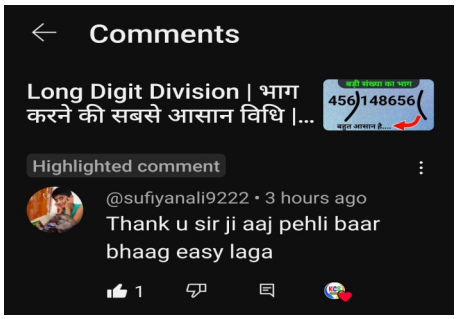

शिक्षक भी ऐसा स्टैंड बनाकर अपना काम चला सकें।

साहू जी ने सबसे पहले अपने ब्लॉक के 10वीं और 12वीं के बच्चों के लिए गणित और विज्ञान के वीडियो बनाना शुरू किए। जल्द ही दूसरे ब्लॉक और जिलों के विद्यार्थी भी उनके चैनल से जुड़ने लगे। जब उन्हें यकीन हो गया कि बहुत लोग इन वीडियो से सीख रहे हैं, तब उन्होंने माध्यमिक कक्षाओं के सारे पाठों के भी क्रमशः वीडियो बना दिए। इसी तरह, प्राथमिक कक्षाओं का गणित भी रोचक और रचनात्मक चित्रों और कहानियों के माध्यम से दिखाया।

"मुझे हमेशा लगता था कि आर्थिक रूप से दुर्बल अभिभावकों को प्राइवेट ट्यूशन का कोई मुफ़्त विकल्प मिलना चाहिए। इस चैनल के रूप में वह विकल्प मैं उन्हें दे पाया हूँ।"

स्कूल के विषयों के अलावा भी शिक्षा से संबंधित जिन सारे विषयों में विद्यार्थियों और शिक्षकों को मदद चाहिए होती है, उस पर वे तुरंत वीडियो बना देते हैं। जैसे विनोबा ऐप की उपयोगिता और उस पर पंजीकरण के बारे में शिक्षकों को जागरूक करने के लिए उन्होंने एक खास वीडियो बनाया है, जो पूरे छत्तीसगढ़ के शिक्षकों के काम आ रहा है।

इस प्रसिद्धि के बावजूद भी साहू जी का पूरा ध्यान अध्यापन की गुणवत्ता पर ही है। यही कारण है कि पाँच साल में उन्होंने उनके यूट्यूब चैनल 'KCSir ki Classes' के द्वारा दिल खोलकर ज्ञान का दान किया। सैकड़ों शिक्षकों और छात्रों के लिए यह चैनल जैसे शिक्षा का 'सिंगल विंडो' बन गया।

अंत में वे कहते हैं, "यूट्यूब तो केवल एक माध्यम है। मेरी सच्ची सफलता यह है कि मेरा एक छात्र एयरफोर्स ऑफिसर बना, मेरे चैनल से पढ़कर कई छात्रों ने बिना ट्यूशन अच्छे अंक प्राप्त किए, अनेक शिक्षक शैक्षिक या तकनीकी दिक्कतों में मुझसे समाधान पाते हैं।" ■

कविता शिक्षण

शिक्षणाने कळते
जीवनाचे महत्त्व ,
एकनिष्ठ ध्येयाने
पाळावे लागते तत्व.

पुस्तक हेच खरे मित्र
गुरुजी ने दिले ज्ञान,
शिक्षणाशिवाय जगात
होत नाही कोणी महान.

शिक्षणाच्या दुनियेत
सर्व झाले व्यस्त,
शिक्षण सोपे आहे
शिकावे लागते जास्त.

आराध्या कमलेश कोरेवार
वर्ग ७ वा, जि.प.उ.प्रा.शाळा कारवाफा

कूट प्रश्न 11 का उत्तर
Ideas

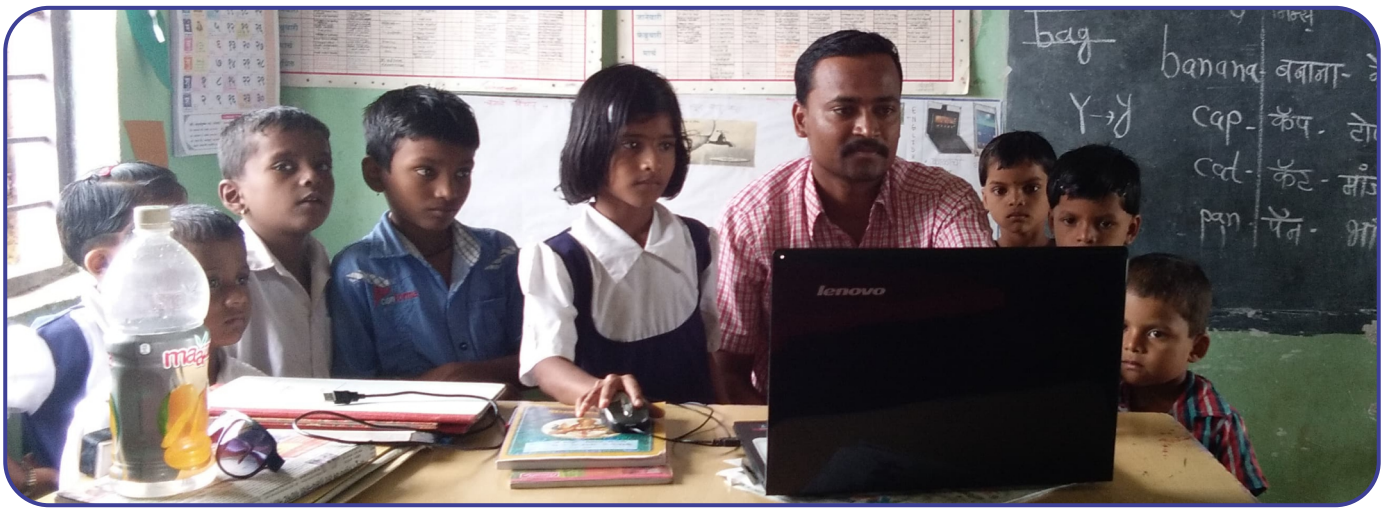

जिला परिषद शाला में पनप रही डिजिटल उस्तादी!

गोडगेवस्ती (धाराशिव): नौ साल का वेदांत कब से नए घर के नक्शे को लेकर बहस कर रहे अपने माँ-बाप को देख रहा था। जब उनकी कहा-सुनी लम्बी खिंच गई और कोई हल नहीं निकला, तो वेदांत ने चुपचाप अपने पिताजी का मोबाइल उठाया और ChatGPT में कुछ लिख दिया। कुछ ही पलों में स्क्रीन पर एक बढ़ियाँ सा 3D डिज़ाइन आ गया। बहस की कोई गुंजाईश नहीं रही। अपने बेटे का यह जादू देखकर माँ-बाप आश्चर्यचकित हो गए।

वेदांत ने यह हुनर सीखा था अपने शिक्षक धनराज बनसुडे से, जो गोडगेवस्ती जिला परिषद प्राथमिक शाला में तीसरी और चौथी कक्षा के शिक्षक हैं। धनराज जी, जो पूरे जिले में उनके अनूठे YouTube चैनल 'धनराज बनसुड़े' की वजह से प्रसिद्ध हैं, स्वयं हमे वेदांत का किस्सा सुना रहे थे।

धनराज जी कहते हैं, "यह चैनल तो मेरे काम का बस एक पहलू है। असली बात तो तकनीक के बारे में जागरूक होना है।" इसी सोच की वजह से वे अपने पढ़ाने के तरीके और अपने समुदाय में एक बड़ा बदलाव ला पाए हैं। धनराज जी अपनी कक्षाओं में तकनीक का बड़ी खूबी से इस्तेमाल करते हैं। उनके बच्चे कैमरा चलाना, वीडियो अपलोड करना और AI Tools का इस्तेमाल करना सीख रहे हैं—जैसा कि छोटे वेदांत ने घर का डिज़ाइन बनाकर दिखाया।

वे 2015 से लगातार वीडीयो बनाकर चैनल पर अपलोड करते रहे। 2019 में लोगों ने उनके चैनल को देखना शुरू किया। तब तक वे पहली से चौथी कक्षा के पाठ्यक्रम को मनोरंजक Video-Lessons में बदल चुके थे, जो 2020 के लॉकडाउन में बहुत उपयोगी साबित हुए।

वे अन्य राज्यों के शिक्षकों की बेस्ट प्रैक्टिसेस को अपने काम में शामिल करने के लिए सतत शोध करते रहे हैं। पढ़ाई को मनोरंजक बनाने हेतु छात्रों के ही रोल-प्ले, स्पोकन इंग्लिश, प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए केबीसी शैली में सामान्य ज्ञान, डिजिटल साक्षरता के ट्यूटोरियल और साथी शिक्षकों को सरकारी नियमों/गतिविधियों की जानकारी देने वाले वीडियो बनाते रहते हैं।

अपने चैनल के कमेंट सेक्शन को दिखाते हुए धनराज जी कहते हैं, "बच्चों के मैसेज आते ही रहते हैं। किसी को प्रतियोगिता के लिए महात्मा गांधी पर भाषण चाहिए, तो किसी को पर्यावरण बचाने पर निबंध। मैं थोड़ा संशोधन कर के, कभी-कभी एआई की मदद से, जिसे जो चाहिए देता हूँ। जब वे कमेंट करके बताते हैं कि मेरे वीडियो की वजह से उन्हें इनाम मिला, वही मेरे लिए भी इनाम जैसा होता है।"

हमे गर्व हैं कि विनोबा ऐप द्वारा भी उनके वीडियो कई शिक्षकों को सतत प्रेरणा दे रहे हैं। आज उनके चैनल पर लगभग एक लाख सब्सक्राइबर हैं, और प्रत्येक वीडियो को अक्सर दो लाख से अधिक बार देखा जाता है।

धनराज जी का समर्पण पूरे समुदाय में गहरा बदलाव ला रहा है। एक छोटे से गाँव के यूट्यूबर शिक्षक ने तकनीक को शिक्षा के हर पहलू में समाहित कर दिया है। अब बच्चे आत्मविश्वास से बोल रहे हैं, शिक्षक जटिल नियम समझ रहे हैं और ज्ञान डिजिटल रूप से साझा हो रहा है। धनराज जी का निस्वार्थ ज्ञानदान का कार्य तेज़ी से बदलती दुनिया के लिए छात्रों और शिक्षकों को निश्चित ही सक्षम बना रहा है। ■

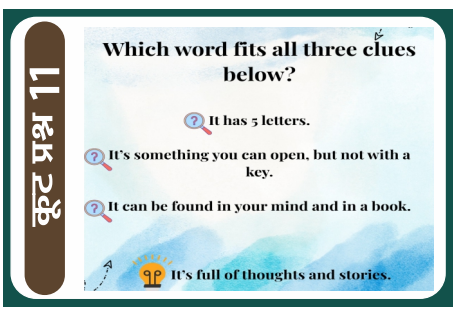

OLF का हाई-टेक विनोबा कार्यक्रम सरकारी स्कूलों में शिक्षा का स्तर बढ़ाने के लिए, जिला प्रशासन के साथ मिलकर शिक्षकों की सहायता करता है, उन्हें पुरस्कृत और प्रोत्साहित करता है। साथ ही अभिनव उपक्रमों को लागू करने की क्षमता बढ़ाने पर काम करता है।

ओपन लिंक्स फाउंडेशन
बंगलो नं. 3, तात्या टोपे सोसायटी, शिवरकर गार्डन के सामने, पुणे-411040
संस्थापक: **संजय डालमिया** ■ सह संस्थापक: **रीना डालमिया**
संपादक: **अमोल मावकर**